संवाद

भारत में सभी को समान रूप से शिक्षा का संवैधानिक अधिकार है। समय-समय पर राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों के माध्यम से यह निर्धारित किया जाता है कि हमारे बच्चों को स्कूल में क्या पढ़ाया जाए, कैसे पढ़ाया जाए और उनके सीखने का मूल्यांकन कैसे हो? सर्व शिक्षा अभियान तथा निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम के माध्यम से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986, संशोधित नीति 1992 तथा *प्रोग्राम ऑफ़ एक्शन* 1992 में इस बात पर बल दिया गया है कि 'बच्चों का न्यूनतम अधिगम स्तर' निर्धारित किया जाना चाहिए और बच्चों के अधिगम का नियमित अंतराल पर आकलन होना चाहिए। अकसर शिक्षकों में इस बात की स्पष्टता नहीं होती कि बच्चों के सीखने के वे कौन-से मापदंड हैं, जिससे कि यह आकलन किया जा सके कि उन्होंने क्या सीखा है? अतः वे पाठ्यपुस्तक को संपूर्ण पाठ्यक्रम मान कर पाठों के अंत में दिए गए प्रश्नों के आधार पर मूल्यांकन करते हैं। शिक्षा का अधिकार अधिनियम में यह अपेक्षा की गई है कि सभी विद्यार्थी एक वांछित उपलब्धि स्तर को प्राप्त करें।

सतत एवं समग्र मूल्यांकन शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने की दिशा में एक आवश्यक कदम है साथ ही हाल ही में शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् ने 'प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल' का निर्माण किया है जो कि कक्षा I से VIII तक विषयवार है। स्पष्ट रूप से परिभाषित 'सीखने के प्रतिफल' शिक्षक, विद्यालय प्रबंधन, माता-पिता तथा समुदाय सभी के लिए महत्वपूर्ण हो सकते हैं तथा इन प्रतिफलों को प्राप्त करने में उनकी भी अहम भूमिका होगी। साथ ही उनकी ज़िम्मेदारी और उत्तरदायित्वों को सुनिश्चित करते हुए ये प्रतिफल दिशानिर्देश का कार्य कर सकते हैं ताकि विभिन्न विषयों में आयु या कक्षा के अनुरूप पाठ्यचर्या की अपेक्षाओं की पूर्ति हो सके। इस अंक में पर्यावरण अध्ययन (कक्षा III से V) के सीखने के प्रतिफलों को शामिल किया गया है, जो कि आपके लिए उपयोगी हो सकते हैं।

सीखने की प्रक्रिया में अब काफी बदलाव आया है अतः शिक्षक की भूमिका बहुत अहम है तथा अब इसे सुगमकर्ता के रूप में देखा जा रहा है। शिक्षक को चाहिए कि वह बच्चों को उनकी रुचि के अनुरूप क्रियाकलापों के माध्यम से खेल-खेल में सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। इस आशय के साथ इस अंक में कुछ लेख प्रस्तुत किये जा रहे हैं। आशा है कि आपको यह अंक पसंद आएगा।

शुभकामनाओं सहित....

अकादमिक संपादक